शिव: किसी मस्त योगी का नाम नहीं है

परमात्मा का स्मरण चिन्ह शिवलिंग:- सभी महान् विभूतियों की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह, मूर्तियां अथवा मंदिर आदि बनाये जाते है। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में सर्वाधिक पूजा सम्भवतः शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद की कोई देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा किसी न किसी रूप में न होती हो। शिव का शब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है-प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ-कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाये जाते थे क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तिया स्थापित न भी करें परंतु फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति के रूप में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों मंदिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में शिव के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें से हिमालय स्थित केदारेश्वर लिंग, काशी में विश्वनाथ और सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं करते हैं जैसे कि हिन्दू करते हैं फिर भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में भी अनेक विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्त्व देते हैं। उदाहरण के रूप में रोम देश में कैथोलिक लोग अण्डाकार रूप के पत्थर को आज तक भी पूजते हैं। अरब देश में पवित्र मक्का तीर्थस्थान पर मुसलमान यात्री आज भी इसी प्रकार के पत्थर को जिसे संग-ए असवद या मक्केश्वर कहा जाता है, चूमते हैं। जापान में रहने वाले बौद्ध धर्म के कई लोग जब साधना करने बैठते हैं तो अपने सम्मुख शिवलिंग जैसा एक पत्थर तीन फुट दूरी पर एवं तीन फुट ऊंचे स्थान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रखते हैं। इजराइल तथा यहूदियों के दूसरे देशों में भी यहूदी लोग कोई समय रस्म के तौर पर शिवलिंग के आकार के पत्थर को छूते हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन और प्रसिद्ध देश मिस्र के फोनेशिया नगर, ईरान के शहर सीरिया, यूनान, स्पेन, जर्मनी, स्केंडेनेविया, अमरीका, मैक्सिको में पीरूहयती द्वीप, सुमात्रा और जावा द्वीप आदि-आदि के विभिन्न भागों में भी शिव की यह स्थूल यादगार यत्र-तत्र विद्यमान है। यही नहीं बल्कि स्काटलैंड के प्रमुख शहर ग्लासगो में, तुर्किस्तान में, ताशकन्द में, वेस्ट-इंडीज के गियाना, लंका, स्याम, मारीशस और मैडागास्कर इत्यादि देशों में भी शिवलिंग का पूजन होता है।

अनेक धर्मों में मतभेद बढ़ जाने के कारण, अन्य देशों में शिवलिंग की लोकप्रियता पहले के समान न भी रही हो परंतु भारत में, जहाँ से इसकी पूजा आरंभ होकर बाहर गयी आज भी लोगों को यह अतिप्रिय है। श्री रामचंद्रजी को रामेश्वर में, श्रीकृष्ण जी को गोपेश्वर में तथा अन्य देवताओं को भी, उन सबका परमपूज्य ईश्वर-शिव को दर्शाने के लिए शिवलिंग की पूजा करते दिखाया है। अतः निस्संदेह स्वीकार करना पड़ेगा कि सारी सृष्टि की आत्माएं चाहे वे किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय की हों, का एक मात्र परमप्रिय परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु शिव ही है।

शिव के विषय में भ्रांतियां:- वर्तमान समय में यद्यपि भारत में शिवलिंग की पूजा तो काफी व्यापक स्तर पर होती है फिर भी शिव के बारे में ऐसी बहुत सी कपोल कल्पित कथायें प्रचलित हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि

लोग अपने पूज्य परमात्मा शिव के विषय में भी कुछ नहीं जानते हैं। ये कथाएं अतिशयोक्ति, मिलावट तथा मनगढ़न्त वृत्तान्तों से भरपूर ही नहीं बल्कि ऐसी हैं जिनसे शिव पर मिथ्या दोष आरोपित होता है। इनमें शिव का पार्वती पर मोहित होना, दक्ष प्रजापिता का चन्द्रमा के साथ अपनी 27 कन्याओं का विवाह करना तथा बाद में उसे श्राप देना इत्यादि कहानियां, निरा गप्प नहीं तो और क्या हैं? परमपिता शिव और उनकी रचना-ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के विषय में अज्ञान होने के ही कारण लोग मतभेद में पड़कर इनके विषय में काम-वासना से भरपूर कलंक लगाते हैं और कभी विष्णु को परमात्मा सिद्ध करने में देवताओं और असुरों में युद्ध इत्यादि की दन्तकथाएं प्रचलित कर देते हैं। दूसरी एक और ध्यान देने योग्य बात है कि अज्ञान के कारण ही भक्त लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता समझते आये हैं। (शिव एवं शंकर में भेद क्या है? यह आगे स्पष्ट किया गया है) बल्कि तमोप्रधान बुद्धि होने के कारण कई तो शंकर को एक व्यक्ति समान मानकर शिव को शंकर का लिंग समझ पूजते आये हैं। खेद है भारत के लोगों की ऐसी तुच्छ अथवा भ्रष्ट-बुद्धि पर।

परमात्मा का कर्त्तव्य एवं त्रिदेव की रचना:- कर्त्तव्य से ही किसी की महिमा अथवा महानता प्रकट होती है। परमपिता परमात्मा शिव सारी सृष्टि का पिता होने के कारण उसका दिव्य एवं कल्याणकारी कर्त्तव्य भी समस्त विश्व के लिये होता है। साधारणतया किसी से यह प्रश्न पूछा जाय तो वह कहता है कि परमात्मा की शक्ति से ही सब कुछ होता है और बिना उसके हुक्म के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह थोड़ा गम्भीरता पूर्वक विवेक से सोचने की आवश्यकता है कि संसार में तो अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के कर्म होते हैं। बुरे कर्मों का फल दुःखदायी होता है तो क्या परमात्मा भी बुरे कर्म कराते है जिससे कि अन्य आत्माओं को दुःख प्राप्त हो। मान लीजिए, कोई आवेश में आकर किसी अन्य व्यक्ति को छुरा छोंप देता है तो क्या इस हिंसक कर्म का कर्त्ता भी परमात्मा को माना जाय? परमात्मा तो सदा सुख-कर्त्ता दुःख-हर्त्ता है तो उसके कर्मों में भी कभी दुःख विद्यमान नहीं हो सकता। यदि पाप-कर्म अथवा पुण्य कर्म परमात्मा ही कराता है तो इसका बुरा वा अच्छा फल आत्माएं क्यों भोगती हैं? जबकि विधान के अनुसार कहा गया है कि जो करेगा सो पावेगा। अतः यह स्मरण रहे कि प्रत्येक आत्मा कर्म करने में पूर्णतया स्वतंत्र है। परमात्मा के हाथ में वह कोई कठपुतली की तरह नहीं है। परमात्मा का नाम, रूप और गुण लौकिक मनुष्यों से भिन्न हैं। उसका कर्म भी लौकिक मनुष्यों से भिन्न हैं तो उसका कर्म भी लौकिक न होकर अलौकिक ही होने चाहिएँ। परन्तु बहुत से लोग यह समझते हैं कि संसार में फल, फूल, पौधे आदि सबकी तो उत्पत्ति, पालना और विनाश ईश्वर ही करता है परंतु यह सब तो अनादि प्राकृतिक नियमों के अनुसार होता है। प्राणियों का जन्म लेना, जीना और मरना भी उसके अपने कर्मों पर आधारित होता है।

स्मरण रहे कि इन तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर की अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों का रचयिता हैं, उसकी सत्ता इनसे भिन्न है। प्रायः लोग शिव एवं शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम समझते हैं परन्तु शिव और शंकर वास्तव में एक नहीं हैं। शंकर एक सूक्ष्माकारी रूप वाले देवता हैं परन्तु शिव निराकारी हैं। शिव कल्याणकारी परम पिता परमात्मा का नाम है और शंकर आकारी देवता हैं जो कि तमोगुणी, आसुरी सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त हैं। कई चित्रों में शंकर और पार्वती को शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया गया है जिसमें शंकर, शिवलिंग की ओर संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते हैं कि वह अपनी योग साधना में शिव पर मनन करें। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रतीत हो जाता है। इन दो का नाम मिश्रित हो जाने का कारण एक और भी हो सकता है कि भारत वर्ष के बहुत से प्रांतों में जैसे सौराष्ट्र, गुजरात आदि में किसी व्यक्ति का नाम लेते समय उसके पिता का नाम भी साथ में मिश्रित रहता है जैसे मोहनदास करमचंद गांधी में उनके पिता का नाम मिश्रित है। इसी पद्धति के अनुसार लोग प्रायः शिव-शंकर का नाम भी इकट्ठा लेते

हैं। परंतु कालान्तर में इस बात को बिल्कुल भुला दिया गया कि शिव और शंकर, रचयिता और रचना के रूप में दो अलग-अलग सत्ताएं हैं।

अतः ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों सूक्ष्माकारी (बिना हड्डी मांस के) देवता हैं, जिनको केवल दिव्य-दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। परन्तु इनको परमात्मा नहीं कह सकते क्योंकि इनके भी रचयिता परमात्मा शिव ही हैं।

परमात्मा का धाम एवं तीन लोक का स्पष्टीकरण:- परमात्मा को जहां त्रिमूर्ति(तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकाल दर्शी (सृष्टि के आदि,मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो उसे त्रिलोकी नाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। अतः तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।

एक तो यह मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों की ही सृष्टि है जिसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं क्योंकि यहां मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं।

इस लोक में बसने वालों का हड्डी-मांस आदि का पिण्ड अथवा शरीर होता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला अथवा लीलाधाम, जिसमें कि सूर्य और चांद मानो बड़ी-बड़ी बत्तियां हैं, भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा कर्म तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में हैं। स्थापना, विनाश और पालना आदि परम-आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं।

सूर्य-चांद से भी पार इस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पूरी और उसके भी पार महादेव शंकर की पुरी है। इन तीनों देवाताओं की पुरियों को मिलाकर इसे सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं हैं। बल्कि सूक्ष्म, प्रकाश तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को, इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प तथा गति तो है परन्तु वहां वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। यहां मुख द्वारा बोलते तो हैं परन्तु मनुष्य के लोक में बोलने पर जो ध्वनि होती है, वह वहाँ अनुपस्थित होती है। इस सूक्ष्म लोक में मृत्यु, दुःख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। धर्मराजपुरी भी इसी सूक्ष्मलोक में ही है।

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महातत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पांच प्राकृतिक तत्वों क्रमशः पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी अन्य धर्मो की आत्माएं अपने आत्माओं की अव्यक्त वंशावली में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है।

अतः वहां न सुख है, न दुःख है बल्कि इन दोनों से एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म-बंधन वाला शरीर नहीं होता है। यहां आत्मा भी अकर्त्ता, अभोक्ता और निर्लिप्त अवस्था में होती है।

यहां हर एक का मन लीन, शान्त अथवा बीज-रूपी अवस्था में होता है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंग-मंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक

में आकर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय करने के लिए उपस्थित होती है।

प्रायः दुःख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं। परम आत्मा का निवास स्थान होने के कारण यह परमधाम नाम से भी प्रसिद्ध है।

यहां पर एक भ्रान्ति को दूर करने की आवश्यकता है कि प्रायः लोग ब्रह्म-तत्व को ही परमात्मा मान बैठे हैं जो वास्तव में परमात्मा अथवा आत्माओं का रहने का स्थान है। जिस प्रकार प्रत्येक चमकने वाली वस्तु सोना नहीं हो सकती, उसी प्रकार प्रकाशवान् ब्रह्म-ज्योति जो कि अविनाशी तत्व है उसे ज्योति स्वरूप चैतन्य परमात्मा मानना बहुत बड़ा भ्रम है। अतः ब्रह्म को परमात्मा मानना अथवा स्वयं को अहम् ब्रह्मास्मि समझना या सर्वखलुविदम् ब्रह्म तत्व से योग लगाने वाली आत्माएं शक्तिशाली अथवा पावन नहीं बन सकती क्योंकि तत्व से आत्माओं को शक्ति नहीं प्राप्त हो सकती है।

शिवरात्रि अथवा परमात्मा का दिव्य-जन्मः- शिव अर्थात् कल्याणकारी नाम परमात्मा का इसलिये है क्योंकि यह धर्मग्लानि के समय, जब सभी मनुष्यात्माएं माया (पांच विकारों) के कारण दुःखी, अशान्त, पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तो उनको पुनः पावन एवं कल्यणकारी बनाने का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। अतः परमात्मा को भी कर्म-भ्रष्ट संसार का उद्धार करने के लिये ब्रह्मलोक से नीचे उतर कर किसी साकार शरीर का आधार लेना पड़ता है। वह किसी साधारण वृद्ध तन में प्रवेश करते हैं। परमात्मा शिव के इस दिव्य अवतरण अथवा अलौकिक जन्म की पुनीत स्मृति में ही शिवरात्रि अर्थात शिवजयंती का त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार भारत में ही विशेष धूम-धाम से मनाया जाता है। क्योंकि भारत भूमि ही परमात्मा के अलौकिक जन्म तथा कर्म की पावन भूमि है।

शिवरात्रि का त्योहार फाल्गुन मास, जो चैत्रवदी वर्ष का अन्तिम मास होता है, में आता है। उस समय कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का पूर्ण अन्धकार होता है। उसके पश्चात् शुक्ल पक्ष का आरंभ होता है और कुछ ही दिनों बाद नया संवत् प्रारंभ होता है। अतः रात्रि की तरह फाल्गुन की कृष्ण चतुर्दशी भी आत्माओं के अज्ञान-अंधकार, अथवा आसुरी लक्षणों के पराकाष्ठा के अन्तिम चरण की द्योतक है। इसके पश्चात् आत्माओं का शुक्ल पक्ष अथवा नया कल्प प्रारंभ होता है अर्थात् अज्ञान और दुःख के समय का अन्त होकर पवित्र तथा सुख का समय शुरू होता है।

परमात्मा शिव अवतरित होकर अपने ज्ञान, योग तथा पवित्रता की शक्ति द्वारा आत्माओं में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करते हैं। इसी महत्त्व के फलस्वरूप भक्त लोग शिवरात्रि पर जागरण करते हैं। शिव और शंकर में अन्तर न समझने के कारण, शिव को मस्त योगी समझ स्वयं को भी कृत्रिम रूप से मस्त बनाने के लिए भांग, चरस, गांजा आदि का इस दिन खूब सेवन करते हैं। बेचारों को यह तो ज्ञान नहीं कि सच्ची मस्ती तो परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञानामृत प्राप्त करने से ही चढ़ती है। उस दिन प्रायः लोग उपवास अथवा व्रत करते हैं। इस वर्ष परमपिता परमात्मा शिव को इस सृष्टि पर अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। अतः इस वर्ष हम 67वीं महाशिवरात्रि का पर्व मना रहे हैं। आप सभी मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के यथार्थ रहस्य को समझकर विकारों का सच्चा व्रत रखें एवं शीघ्र ही आने वाली नई सतयुगी दुनिया में देवपद को प्राप्त करें।

ओम् शान्ति